आए चारों संप्रदा के साधूजन, चार आश्रम और चार वरन।
चारों खूटों के आए गावते गुन, भई नई रे नवों खंडों आरती।। १२ ।।

चारों सम्प्रदाय (रामानुज, नीमानुज, विष्णु श्याम और माधवाचार्य) के साधुजन आए। चारों आश्रम (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास) के तथा चारों वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रिय, शूद्र और वैश्य) के लोग चारों खूटों से बुधजी श्री प्राणनाथजी के गुण गाते हुए आए और इस तरह से इस नई आरती की गूंज नौ खण्डों में हुई।

आए गछ चौरासी जो अरहंती, दत्तजी दसनामी जो महंती।
आए करम उपासनी वेदांती, भई नई रे नवों खंडों आरती।। १३ ।।

जैन मुनि, चौरासी सिद्ध (अर्हन्त) दत्तात्रेय तथा दशनामी, तीर्थ, आश्रम, वन, पर्वत, सागर, पुरी, भारती और सरस्वती के संन्यासी एवं महन्त आए। कर्म और उपासना करने वाले तथा वेदान्ती भी आए। इस तरह से यह नई आरती नौ खण्डों में गूंज रही है।

आए खट दरसन खट सास्त्र भेदी, बहत्तर फिरके आए अथर वेदी।
आए सकल कैदी और बे कैदी, भई नई रे नवों खंडों आरती।। १४ ।।

षट दर्शन (न्यायिक, योगशास्त्र, सांख्य, वैशेषिक, मीमांसा और वेदान्त) के छः आचार्य (गौतम, पातंजलि, कपिल, कणाद, जैनमुनि और व्यास) आए। अथर्ववेद के मानने वाले आए और मुसलमानों के बहत्तर फिरके आए। रीति-रिवाज मानने वाले और न मानने वाले सभी आए। इस तरह से इस नई आरती की गूंज नौ खण्डों में फैली।

बुध जी की जोतें कियो प्रकास, त्रैलोकी को तिमर कियो नास।
लीला खेलें अखंड रास विलास, भई नई रे नवों खंडों आरती।। १५ ।।

श्री प्राणनाथजी की जागृत बुद्धि के ज्ञान का प्रकाश फैला, जिससे चौदह लोकों का अन्धकार मिटा। अब सब अखण्ड लीला (जागनी रास लीला) का आनन्द ले रहे हैं। इस तरह से इस नई आरती की गूंज नौ खण्डों में हो रही है।

पिया हुकमें गावें महामत, उड़ाए असत थाप्यो सत।
सब पर कलस हुओ आखिरत, भई नई रे नवों खंडों आरती।। १६ ।।

श्री प्राणनाथजी के हुकम से ही महामतिजी ने असत (अज्ञान) को उड़ाकर सत (ज्ञान) की स्थापना की। यह दुनियां के सभी ज्ञान के ऊपर कलश के समान हो गया। इस तरह से नई आरती की गूंज नौ खण्डों में हुई।

॥ प्रकरण ॥ ५६ ॥ चौपाई ॥ ६२८ ॥

भोग-राग श्री काफी

कृपा निध सुन्दरवर स्यामा, भले भले सुंदरवर स्याम।
उपज्यो सुख संसार में, आए धनी श्री धाम।। १ ।।

सुन्दरबाई (श्यामाजी) के धनी श्री राजजी महाराज कृपा के सागर, धाम के धनी संसार में आए, इससे अपार सुख हुआ।

Nijanand App

प्रगटे पूरन ब्रह्म सकल में, ब्रह्म सृष्ट सिरदार।
ईश्वरी सृष्ट और जीव की, सब आए करो दीदार।। २ ।।

सबके बीच पूर्ण ब्रह्म प्रगट हो गए हैं। ब्रह्मसृष्टि, ईश्वरीसृष्टि, और जीवसृष्टि! सब आकर मालिक श्री प्राणनाथजी के दर्शन करो।

नित नए उछव आनंद, होत किरंतन सार।
वैष्णव जो कोई खट दरसन, आए इष्ट आचार।। ३ ।।

यहां नित्य नए आनन्द, उत्सव, भजन, कीर्तन हो रहे हैं, इसलिए वैष्णव तथा षट दर्शन वालो! आओ, सबके इष्ट पारब्रह्म श्री प्राणनाथजी आए हैं।

भोजन सर्वे भोग लगावत, पांच सात अंन पाक।
मेवा मिठाई अनेक अथाने, बिध बिध के बहु साक।। ४ ।।

यहां सब मिलकर कई प्रकार के पकवान, मेवा, मिठाई, तरह-तरह के अचार और शाक का भोग लगाकर भोजन करते हैं।

अठारे बरन नर नारी आए, साजे सकल सिनगार।
प्रेम मगन होए गावें पिया जी के, धवल मंगल चार।। ५ ।।

अठारह वर्णों के नर-नारी सिनगार साजकर आए हैं। पियाजी के प्रेम में मगन होकर मंगल गीत गाते हैं।

कई गंधर्व गुन गावें बजावें, कई नट नाचन हार।
कई रिखि मुनी वेद पढ़त हैं, बरतत जय जयकार।। ६ ।।

कई गंधर्व (गाने वाले) गाते बजाते हैं। नट लोग नाच रहे हैं। ऋषि मुनि वेद पाठ करते हैं और चारों तरफ श्री प्राणनाथजी का जय-जयकार हो रहा है।

जब की माया ए भई पैदा, ए लीला न जाहेर कब।
बृज रास और जागनी लीला, ए जो प्रगटी अब।। ७ ।।

जबसे यह माया का संसार बना है। यह लीला कभी नहीं हुई। बृज, रास और जागनी की लीला जो अब हुई है, वह पहले कभी नहीं हुई।

चारों तरफों चौदे लोकों, ए सुध हुई सबों पार।
बाजे दुन्दुभि भई जीत सकल में, नेहेचल सुख बे सुमार।। ८ ।।

चौदह लोकों में चारों तरफ पार की जानकारी सबको हो गई। सब धर्माचार्यों के झूठे अभिमान तोड़ करके सत की जीत के नगाड़े बज रहे हैं और बेशुमार अखण्ड सुख मिल रहा है।

जोत उद्योत कियो त्रिलाकी, उड़यो मोह तत्व अंधेर।
बरस्यो नूर वतन को, जिन भान्यो उलटो फेर।। ९ ।।

जागृत बुद्धि का ज्ञान त्रिलोकी (तीनों लोकों) में फैला। मोहतत्व और अज्ञान के अंधेरे का परदा उड़ गया। अखण्ड घर परमधाम के ज्ञान की वर्षा हुई जिससे संसार की झूठों को पूजने की चाल बदल गई।

प्रगटे ब्रह्म और ब्रह्मसृष्टी, और ब्रह्म वतन।
महामत इन प्रकास थें, अखंड किए सब जन।। १० ।।

पारब्रह्म, ब्रह्मसृष्टि और अखण्ड परमधाम जाहिर हो गए। श्री महामतिजी कहते हैं कि इन श्री प्राणनाथजी की कृपा से सब संसार के जीवों को अखण्ड मुक्ति मिली।

।। प्रकरण ।। ५७ ।। चौपाई ।। ६३८ ।।

Nijanand App